ISSN: 2582-7162
शोध

CBSE पाठ्यक्रम में मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव (ग्रेडिंग प्रणाली) का विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. आरती शर्मा[1] सुमनदेवी शर्मा[2]

[1]सहायक आचार्य, एस.एस.जी पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय बनीपार्क, जयपुर (राज.)
[2]सहायक आचार्य, एस.एस.जी पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय बनीपार्क, जयपुर (राज.)

Corresponding Author:
सुमनदेवी शर्मा
(शोधार्थी)
सहायक आचार्य, एस.एस.जी पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय बनीपार्क, जयपुर (राज.)
Email: sumansharma38501@gmail.com

Received January 17, 2023, Accepted February 10, 2023 Published March 04, 2023

प्रस्तावना :–निवजात शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। वह न बोलना जानता है न चलना–फिरना। उसका न तो कोई मित्र होता है और न शत्रु। न ही उसे समाज के रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान भी नहीं होता और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है। परन्तु वह जैसे–जैसे बड़ा होता जाता है, वैसे–वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता जाता है। इस प्रभाव के कारण जहाँ एक ओर उसका शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है वहाँ दूसरी ओर उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती है। परिणाम स्वरूप वह शनैः शनैः प्रौढ व्यक्तियों के उत्तरदायित्वों को निभाने योग्य बन जाता है।सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ है कि उनका वर्णन करना कठिन है। इस सन्दर्भ में केवल इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भाँति सांसारिक चिन्ताओं का दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है।हम देश में रहे अथवा विदेश में, शिक्षा प्रत्येक स्थान पर हमारी सहायता करती है। शिक्षा के ही द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

मुख्य शब्दः– पाठ्यक्रम;, मूल्यांकन प्रक्रिया;, शैक्षिक उपलब्धि;, प्रभाव

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर परिव्रता, शोक व कष्ट के अन्धकार में डूब जाता है।

किसी भी राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों के प्रभावशाली उपयोग पर निर्भर करता है। शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसे संसार के सभी प्राणी न्यूनाधिक मात्रा में जन्म से मृत्यु पर्यन्त प्राप्त करते हैं। शिक्षा से ही मानव जीवन का विकास होता है। जीवन की भौतिक, आध्यात्मिक और मानसिक परिस्थितियों पर मानव इसी के माध्यम से विजय प्राप्त करता है। शिक्षा के फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को विकसित करता है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षा के उद्देश्य है बालक का सर्वांगीण विकास करना इसके लिए उसकी जन्मजात शक्तियों और व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं को जानना आवश्यक है। विद्यालय में विभिन्न योग्यताओं और क्षमताओं वाले विद्यार्थी होते हैं इनके लिये एक ही प्रकार का पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधि उपयुक्त नहीं होती। अतः बालक की शिक्षा योजना बनाते समय उनके मानसिक स्तर और क्षमताओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। समाज में जब से औपचारिक शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालयों की स्थापना हुई है तभी से शैक्षिक निष्पत्ति को महत्व दिया गया है। अतः प्रत्येक विद्यालय शैक्षिक निष्पत्ति पर विशेष बल देता है क्योंकि विद्यालयों की सफलता एवं गुणवत्ता का निर्णय उस विद्यालय के परीक्षा परिणामों के आधार पर ही किया

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-559-563

जाता है। कोई भी विद्यालय विद्यार्थियों का चयन तथा उनकी क्रमोन्नति अथवा उनको छात्रवृत्ति आदि प्रदान करने का आधार शैक्षिक निष्पत्ति ही होता है। विद्यालय में विद्यार्थी को शैक्षिक निष्पत्ति के आधार पर अपनी स्थिति निर्धारण करने का प्रशिक्षण मिलता है।

नई शिक्षा नीति 1986 के अनुसार, ''शिक्षा व्यवस्था पाठ्यक्रम, शिक्षण तकनीकों एवं प्रविधियों में अनेक प्रकार से परिवर्तन लाने के प्रयास किए जारहे हैं। जिससे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को उन्नत किया जा सके।

शिक्षा का प्रमुख कार्य बालक कोसम्पूर्ण मानव बनाने हेतु व्यवहार में परिवर्तन लाना है। यह परिवर्तन तीन प्रकार के होते हैं, यथा

(1) जन्मजात क्षमताओं में परिवर्तन
(2) अज्ञान से ज्ञान में परिवर्तन
(3) अभिप्रेरणा से आदर्शों में परिवर्तन।

ये तीनों प्रकार के परिवर्तन समुचित रूप से करने के लिए मूल्यांकन का सहारा लेना आवश्यक है।

टाज शिक्षा का ह्रास कदाचित शिक्षा के उद्देश्य विहीन होने के कारण है। आवश्यकता, शिक्षा, शिक्षण और परीक्षण को उद्देश्योन्मुखी बनाने की है। नवीनप्रकार के पाठ्यक्रमों का एक उद्देश्य होना चाहिए। उद्देश्यों के चयन और निर्धारण के पश्चात् अधिगम अनुभव प्रदान करने तथा अन्य क्रियाओं का चयन किया जाना चाहिये। आज प्रत्येक शैक्षिक गतिविधि हर प्रकार का शिक्षण परीक्षा केन्द्रित होता जारहा है। परीक्षा लेने से पूर्व हमें यह स्पष्ट ज्ञात होना चाहिए कि परीक्षा का क्षेत्र कहाँ तक सीमित रखना है, बालकों को कितना ज्ञान दिया जा चुका है तथा किस रूप में दिया गया है; बालकों में कौन–कौन से व्यवहारिक परिवर्तन हुए है जो उनकी प्रगति के सूचक है। इस प्रकार बालक के व्यवहार में ऐसे परिवर्तन लाए जाए जो उसके स्वयं की तथा समाज की दृष्टि से उपयोगी हो, साथ ही उसे सीखने के अनुभव भीव्य वस्थि तक्रम में प्रदान किये जाए।

अध्ययन का औचित्य –

आज का संसार दिन–प्रतिदिन अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक होता जारहा है। बढती प्रतिस्पर्धा के फल स्वरूप समाज के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहा है। तो शिक्षा का क्षेत्र कैसे अछूता रह सकता है। वर्तमान में शिक्षा के सभी आयामों में परिवर्तन की लहर सी चल रही है। चाहे वह पाठ्यक्रम हो, शिक्षण विधियाँ हो, विद्यालयों का बुनियादी ढाँचा हो, तकनीकी प्रयोग हो अथवा अध्यापकों का कक्षा–कक्ष व्यवहार हो। इन सभी परिवर्तनों का मूल उद्देश्य एक ही है कि विद्यार्थियों में बढती प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न होने वाले तनाव को किसी हद तक कम करके उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढायी जासके। उपलब्धि की गुणवत्ता आज वैयक्तिक प्रोन्नति का प्रमुख घटक है। शोधकर्त्री ने विचार किया कि मूल्यांकन प्रक्रिया विभिन्न स्तरोंपर अलग–अलग तरीके से अपनाई जाती है। छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं उनकी कमियों को दूर करने हेतु मूल्यांकन आवश्यक है, परन्तु बढती प्रतिस्पर्धा के फल स्वरूप उत्पन्न होने वाले तनाव को देखते हुए समय–समय पर अंकन प्रक्रिया में बदलाव करने की आवश्यकता है।

अधिकाधिक अंक लाने की होड व अभिभावकों का बच्चों पर बढता दबाव अत्यधिक गंभीर समस्या बनकर खडा हो गया तथा शिक्षा विद्‌ों को अंक प्रणाली की उपादेयता पर सोचने हेतु विवश किया। इसलिये अनेक समितियों ने अंक प्रणाली के स्थान पर ग्रेड प्रणाली लागू करना प्रस्तावित किया।

मुदालियर आयोग ने कहा कि मूल्यांकन अंकों में न करके ग्रेड(प्रतीकों) में किया जायें। इसमें ए–विशेष योग्यता, बी–योग्यता सी–पास, डी–फेल, ई–पुनः परीक्षा के लिए अनुशंसित किये गए। इन प्रतिकों के लिए कितने अंक होंगे इसका निश्चय पहले से किया जाये।

शिक्षा के स्तर पर गुणात्मक सुधार करने की दिशा में अंकों के स्थान पर ग्रेडिंग व्यवस्था लागू करने का निर्णय एक महत्वपूर्ण कदम है। यह माना जा रहा है कि व्यवस्था के उच्च अंकों की गलाकाट प्रतिस्पर्धा पर नियंत्रण लगेगा। साथ ही परीक्षण एवं मूल्यांकन प्रणाली भी सरल हो जायेगी।

अध्ययन के उद्देश्य –

''CBSE पाठ्यक्रम में मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव (ग्रेडिंग प्रणाली) का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. CBSE पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा छः के शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. CBSE पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा छः के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाएँ–

1. CBSE पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा छः के शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-559-563

2. CBSE पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा छः के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि –प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया

न्यादर्श– शोध कर्त्री ने शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए न्यादर्श के रूपमें 100 विद्यार्थियों का चयन किया है।

सम्पूर्ण विद्यार्थी (इकाईयाँ)

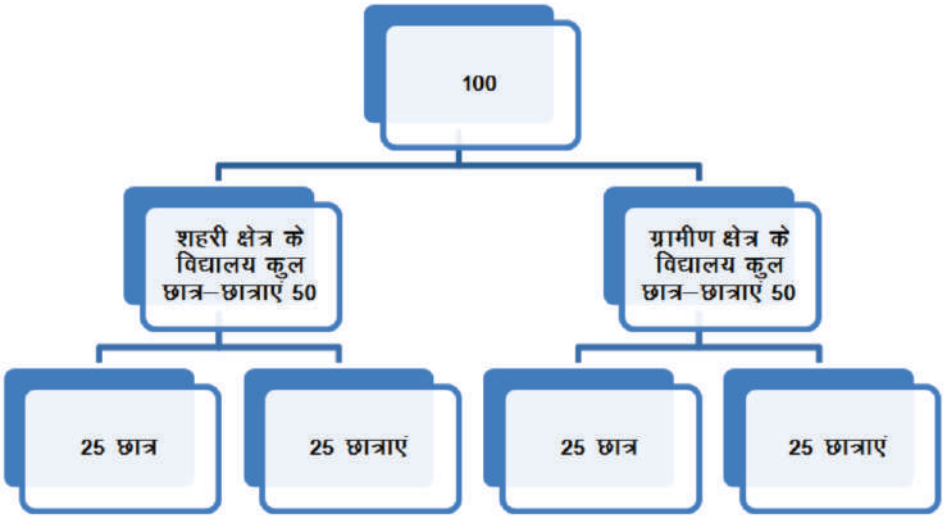

चर

स्वतन्त्र चर– शैक्षिक उपलब्धि

आश्रितचर–छठी कक्षा के छात्र–छात्राएँ

सीमांकन–जयपुर जिले के 2 विद्यालयों का अध्ययन हेतु चयन

1. तिलक पब्लिक स्कूल
2. ऑक्सफोर्ड इण्टरनेशनल स्कूल

उपकरण–स्वनिर्मित प्रश्नावली

सांख्यिकी –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात परीक्षण

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना संख्या–1

पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा के शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी सं. 1.1

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	CR	स्वतंत्रता का अंश
छात्र	25	72	6.48	3.94	48
छात्राएं	25	77.96	3.95		

df=48 के लिए त्रुटि के 0.01 स्तर पर C.R. का अपेक्षित मान– 2.68

48 के लिए त्रुटि के 0.05 स्तर पर का अपेक्षित मान–2.01

विश्लेषण :–

सारणी सं. 46 में कक्षा के शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-559-563

कक्षा छः के शहरी क्षेत्र की छात्रों का मध्य मान 72 है तथा छात्राओं का मध्य मान 77.96 है। शहरी क्षेत्र के छात्रों का मानक विचलन 6.48 तथा छात्राओं का मानक विचलन 3.95 है। दोनों समूहों के मध्य मानों की सार्थकता की जाँच हेतु C.R. जमेज का प्रयोग किया गया है। जिसका मान 3.94 प्राप्त हुआ है जो कि त्रुटि के 0.05 स्तर पर अपेक्षित मान 2.01 से अधिक है। अर्थात् दोनों समूहों के मध्य मानो में सार्थक अन्तर है अर्थात् यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कक्षा–6 के शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

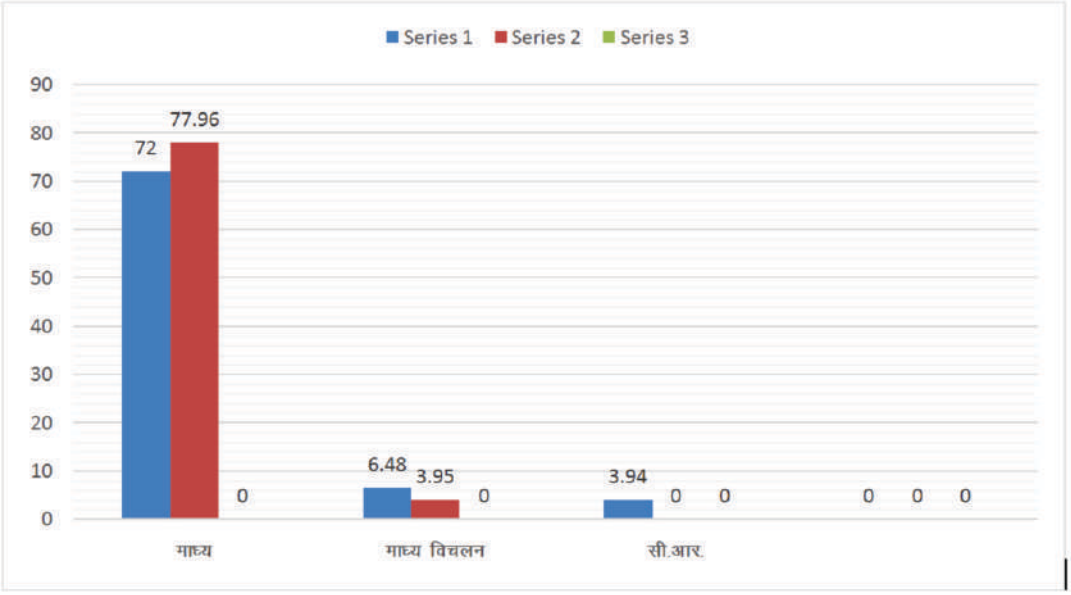

परिकल्पना :– 2
CBSE पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा छः के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी सं. 1.2

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	CR	स्वतंत्रता का अंश
छात्र	25	68.12	5.20	2.73	48
छात्राएं	25	72.6	6.37		

df= 48 के लिए त्रुटि के 0.01 स्तर परC.R. का अपेक्षित मान– 2.68
df= 48 के लिए त्रुटि के 0.05 स्तर परC.R. का अपेक्षित मान– 2.01
विश्लेषण :–
सारणी सं. 1.2 में कक्षा छः के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है।
कक्षा छः के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का मध्यमान 68.12 है तथा छात्राओं का मध्य मान 72.6 है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का मानक विचलन 5.20 तथा छात्राओं का मानक विचलन 6.37 है। दोनों समूहों के मध्य मानों की सार्थकता की जाँच हेतु C.R. जमेज का प्रयोग किया गया है। जिसका मान 2.73 प्राप्त हुआ है जोकि त्रुटि के 0.05 स्तर पर अपेक्षित मान 2.01 से अधिक है। अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अर्थात् यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कक्षा छः के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-559-563

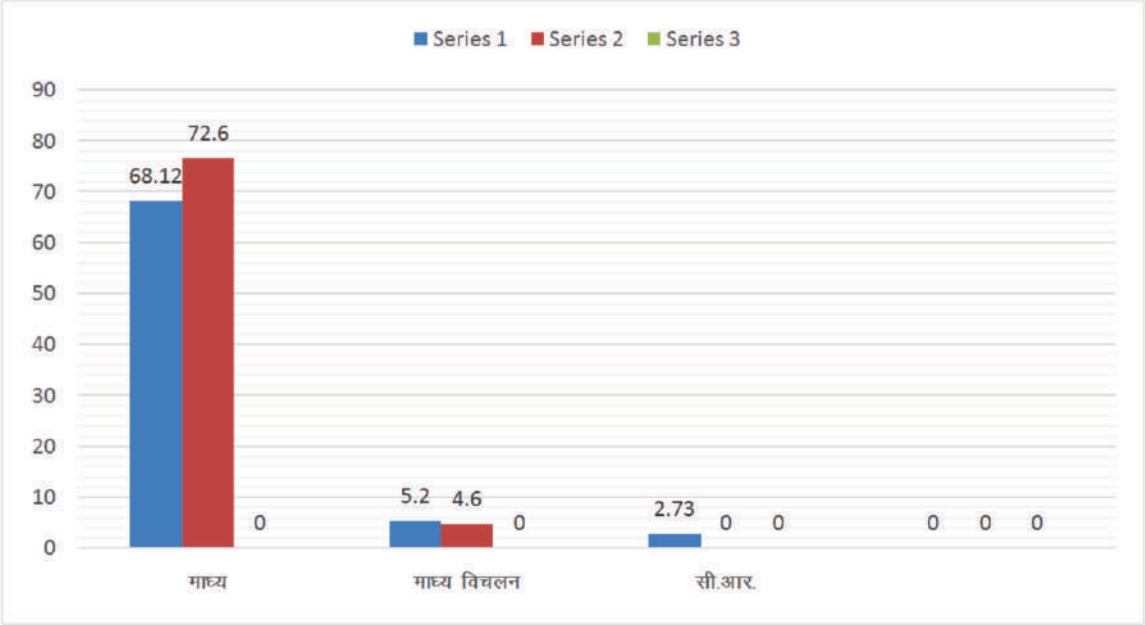

निष्कर्ष :–

परिकल्पना 1 व परिकल्पना 2 से यह निष्कष निकाला जाता ह कि कक्षा छः के शहरी क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. वरिष्ठ के.सी. –जनरल ऑफ इंडियन ऐजुकेशन 1981
2. शर्मा डॉ. आर.ए. –सम्बन्धित शोध साहित्य की समीक्षा आर लाल बुकडिपो मेरठ 1980
3. लुण्डबर्ग जार्ज– शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण वसु द्वारा प्रकाशन गोरखपुर 1994–95
4. कपिल डॉ. एच.के. –सांख्यि की के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 1997–98

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-559-563